Dr. Kavi Kumar
Asst. Prof. (Guest)
Dept. of Psychology,
S.R.A.P. College, Barachakia
(A constituent unit of B.R.A. Bihar University
Muzaffarpur)

Subject — Psychology
Topic — रोगी केन्द्रित चिकित्सा
Class — B.A. Part I (Hon) Paper IInd
Day — Monday
Date — 21/02/2022
Period — 3rd
Contact No — 9801466117 / 6202215708

Q. What is client-centred therapy? Describe its merits and demerits.

प्रश्न :- रोगी केन्द्रित चिकित्सा क्या है? इसके गुण-दोषों की विवेचना करें?

उत्तर :- रोगी केन्द्रित चिकित्सा :- मानवतावादी चिकित्सा की यह एक महत्वपूर्ण चिकित्सा विधि है। इसकी स्थापना कार्ल रोजर्स ने सन (1951 - 1986) में की थी। इसे निर्देशित चिकित्सा भी कहा जाता है। इसमें रोगी व्यक्ति को सहायक संवेगात्मक वातावरण प्रदान किया जाता है। जो उसकी चिकित्सा की प्रगति तथा दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

रोजर्स का कहना है कि चिकित्सा का उद्देश्य रोगी के परिवर्तन को ध्यान में रखकर तय किया जाना चाहिए। चिकित्सक को चाहिए कि वह ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करें की रोगी अपनी आत्मनिष्ठ क्षमताओं को पुनः संगठित कर सके तथा क्षमता एवं योग्यता को प्राप्त कर सके। रोजर्स रोगियों को असामान्य नहीं मानते हैं। उनका मत है कि किसी व्यक्ति को समझने के लिए उसके अज्ञान तथा भाव को समझना होगा।

रोगी केन्द्रित चिकित्सा में चिकित्सा की प्रविधि इतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि चिकित्सक का वातावरण महत्वपूर्ण है। यह भावनात्मक दृष्टिकोण से अनुकूल होना चाहिए। ऐसा अनुकूल वातावरण बनाने के लिए चिकित्सक को तीन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

1. अनुकूलमता — रोजर्स का सुझाव है कि चिकित्सक को रोगी के प्रति स्वाभाविक निष्कपट में अनुकूल होना चाहिए। उसे रोगी से ईमानदारी से बातें करनी चाहिए। बातचीत में अपनापन होना चाहिए ताकि वह आश्वस्त हो सके कि उसके प्रति चिकित्सक की सोच सहायता परक है।

2. बिना शर्त रचनात्मक सम्मान :- चिकित्सक को चाहिए कि रोगी के प्रति उसका व्यवहार रचनात्मक, अनुकूल एवं सम्मानजनक हो। उसे वह जताना चाहिए कि वह उसका शुभ चिंतक है उसका कल्याण चाहता है। उसका तात्पर्य यह है कि चिकित्सक को रोगी की हर बात मान लेनी चाहिए।

3. परानुभूति (Empathy) रोजर्स का यह भी कहना है कि चिकित्सक रोगी के सन्दर्भ को समझना चाहिए। उसे रोगी आदि को स्पष्ट बताना चाहिए कि वह उसकी समस्याओं को समझता है तथा महत्वपूर्ण समझता है।

चिकित्सक की भूमिका :- रोगी केन्द्रित चिकित्सा में चिकित्सक एक रोगी / सहभागी के रूप में कार्य करते हैं, चिकित्सक रोगी को न्यूनतम सलाह तथा निर्देश देता है वह मुख्य रूप से निम्नांकित कार्य करता है।

1. चिकित्सक द्वारा सहज तथा सहयोगी व्यवहार का प्रदर्शन।
2. रोगी की स्वयं सहायता प्रदान करना ताकि वह अपनी समस्याओं की पहचान स्वयं कर सके।
3. चिकित्सक रोगी की समस्याओं के बारे में भावनात्मक स्पष्टीकरण देता है। वह मानव दर्पण का कार्य करता है।
4. चिकित्सक द्वारा रोगी को अपनी भावनाओं से अवगत कराना उद्देश्य होता है।

इस प्रकार रोगी केन्द्रित चिकित्सा के अन्तर्गत चिकित्सक का उद्देश्य रोगी के व्यक्तित्व का पुनर्निर्माण करना होता है। ताकि वह रचनात्मक जीवन जी सके।